दर्शनशास्त्र का इतिहास
61 व्हाइटहेड की प्रक्रिया दर्शनशास्त्र
व्हीटन कॉलेज के डॉ. आर्थर होम्स द्वारा

खैर, जो भी हो, हम इस हफ़्ते व्हाइटहेड, प्रोसेस फिलॉसफी और प्रोसेस थियोलॉजी पर फोकस करने वाले हैं, क्योंकि स्टम्पफ ने उसी चैप्टर में दो प्रोसेस फिलॉसफर, बर्गसन और व्हाइटहेड के बारे में बात की है। मैंने व्हाइटहेड पर फोकस करने का फैसला सिर्फ इसलिए किया है क्योंकि प्रोसेस थियोलॉजी के डेवलपमेंट में उनका बहुत असर है। और हम व्हाइटहेड में इसकी शुरुआत देखेंगे, और बाद में , मैं इसके और पहलुओं के बारे में कुछ कमेंट्स करूँगा।

लेकिन बिना किसी शक के, व्हाइटहेड इन दोनों में से 20वीं सदी के दूसरे हिस्से में सबसे ज़्यादा असरदार हैं। आपने व्हाइटहेड को पढ़ना शुरू नहीं किया है। मुझे लगता है इसका मतलब है कि आपने स्टम्पफ का वह चैप्टर भी पढ़ना शुरू नहीं किया है जिसमें उन्होंने व्हाइटहेड का परिचय दिया है।

ठीक है, उन्होंने कैम्ब्रिज में एक मैथमैटिशियन के तौर पर शुरुआत की थी। बाद में वे यूनिवर्सिटी ऑफ़ लंदन में साइंस के फिलॉसफर बन गए। और 63 साल की उम्र में, जब वे रिटायरमेंट के बारे में सोच रहे थे, तो वे हार्वर्ड में फिलॉसफी के प्रोफेसर बन गए, मुझे लगता है कि यह लगभग 15 साल था।

और जब वे आखिरकार रिटायर हुए, तो वे हार्वर्ड यार्ड की छाया में वहीं रहते रहे, और स्टूडेंट्स और फैकल्टी के लिए ओपन हाउस रहे, और इसलिए उस समय से व्हाइटहेड के साथ उनकी बातचीत रिकॉर्ड की गई, जब तक कि उनकी मृत्यु नहीं हो गई, मुझे लगता है, 88 साल की उम्र में। उनका जन्म 1859 में हुआ था, मुझे लगता है। मैं उन प्रभावों के बारे में कुछ बताकर शुरू करना चाहता हूँ जिन्होंने उनकी सोच को आकार दिया।

और पहला है हेगेल की फिलॉसफी, जिसे मैं हेगेल का इवोल्यूशनरी आइडियलिज्म कहता हूं। आप हेगेल में आइडियलिज्म को ठीक से समझ सकते हैं । इवोल्यूशनरी, हां, क्योंकि उन्होंने हिस्टोरिकल डेवलपमेंट पर जोर दिया है।

की एक संख्या 19वीं सदी के आइडियलिस्ट और उनके बाद आने वाले, जिनके बारे में हम ब्रेक से एक हफ़्ते पहले बात कर रहे थे, उन्हें इवोल्यूशनरी आइडियलिस्ट माना जा सकता है। हाँ, वे इवोल्यूशन की थ्योरी, नेचुरल सिलेक्शन, अगर आप चाहें, या इवोल्यूशन की थ्योरी के दूसरे कई रूपों को मानते हैं। लेकिन वे फिलॉसॉफिकल नेचुरलिस्ट, मेटाफिजिकल नेचुरलिस्ट नहीं हैं।

वे आइडियलिस्ट हैं। इसलिए इन लोगों के अनुसार, वह इवोल्यूशनरी थ्योरी नेचुरलिज़्म के साथ, आइडियलिज़्म के साथ कम्पैटिबल है। और उनका कहना है कि जबकि असलियत आत्मा के नेचर की है, हेगेल के मामले में एब्सोल्यूट आत्मा, ऐसे कई लेवल हैं जिनसे वह इम्मैटेरियल, फ्री,

क्रिएटिव आत्मा नेचर, इंसानी अस्तित्व और इंसानी इतिहास की घटनाओं में पूरी तरह से ज़ाहिर हो रही है।

तो इवोल्यूशनरी प्रोसेस, बायोलॉजिकल इवोल्यूशन, कल्चरल इवोल्यूशन, पूरी इवोल्यूशनरी प्रोसेस को एब्सोल्यूट के डायलेक्टिकल अनफोल्डिंग के तौर पर समझा जाता है, आप देखिए, एक ऐसे पॉइंट तक जहाँ आत्मा की वह आज़ादी सिर्फ़ इंक्लूडेड होने के बजाय सेल्फ-कॉन्शियस हो जाती है। लेकिन अनकॉन्शियस। तो कल्चर में आज़ाद, क्रिएटिव स्पिरिट का सेल्फ-कॉन्शियस एक्सप्रेशन वह पीक है जहाँ इवोल्यूशनरी प्रोसेस आगे बढ़ता है।

अब, उस तरह का इवोल्यूशनरी विचार एक आइडियलिस्ट कॉन्टेक्स्ट में था। और इसलिए कॉन्शसनेस ही चाबी है, बेसिक मॉडल है। यह खुलती हुई सेल्फ-कॉन्शसनेस क्या है? यही चाबी है।

और ज़ाहिर है, खुलती हुई सेल्फ़-कॉन्शसनेस कोई सब्सटेंस नहीं है। हेगेल स्पिरिट को एक न बदलने वाला सब्सटेंस नहीं, बल्कि एक क्रिएटिव प्रोसेस मानते हैं। यह सब्सटेंस नहीं, बल्कि प्रोसेस है।

और इसलिए आपके पास कुछ बेसिक चीज़ों के बिना बदलाव के होने से असलियत की बेसिक सोच में बदलाव होता है। चाहे वह थैली का पानी हो, या कुछ और, या डेसकार्टेस की सोचने वाली चीज़ हो, या कुछ और। न बदलने वाले सब्सटेंस से किसी तरह के डायलेक्टिकल प्रोसेस तक, जिसमें, हेगेल की तरह, उसका पूरा लोगो स्ट्रक्चर होता है, लेकिन कोई न बदलने वाला सब्सटेंस नहीं होता।

आप देखिए, प्रोसेस का स्ट्रक्चर ही बदलता नहीं है, चीज़ें नहीं बदलतीं। तो, हेगेल में, यह व्हाइटहेड के प्रोसेस के विचार में बदल जाता है। और हेगेल की तरह, वह प्रोसेस की एक फेनोमेनोलॉजी करते हैं।

कहने का मतलब है, चेतना की एक फेनोमेनोलॉजी। यह प्रोसेस कैसा है, उन घटनाओं की बनावट का एक डिटेल्ड ब्यौरा है जो प्रोसेस को बनाती हैं। और यह प्रोसेस कोई मशीनी चीज़ नहीं है, जैसा कि 18वीं सदी के साइंस में था।

लेकिन यह मॉडल मैकेनिस्टिक से ज़्यादा ऑर्गेनिक है। मशीन जैसा होने के बजाय ग्रोथ प्रोसेस जैसा ज़्यादा है। और इंग्रीडिएंट्स इस मायने में एटॉमिस्टिक नहीं हैं कि उनका किसी और चीज़ से कोई ज़रूरी रिश्ता नहीं है।

इवोल्यूशनरी आइडियलिज़्म में आपको यही मिलता है ।

और यह सब व्हाइटहेड में ट्रांसलेट होता है। आइडियलिज़्म को छोड़कर । आप देखिए, व्हाइटहेड कहते हैं कि वह इसे ट्रांसलेट करने जा रहे हैं, इसे एक नेचुरलिस्टिक मेटाफ़िज़िक में ट्रांसफ़र करेंगे।

तो वह एक इवोल्यूशनरी आइडियलिस्ट नहीं, बल्कि एक इवोल्यूशनरी नेचुरलिस्ट बनने जा रहा है। कम से कम, वह यही कहता है। क्या उसके जीवन के आखिर में, जब भगवान का कॉन्सेप्ट उसके विचारों में ज़्यादा बड़ा होने लगता है, तो क्या वह बदलता है, यह एक और सवाल है।

लेकिन कम से कम मेटाफ़िज़िक को डेवलप करने का उनका इरादा एक इवोल्यूशनरी नेचुरलिज़्म था। असल में, जिस हेगेलियन विचारक ने उन पर सबसे ज़्यादा असर डाला, वह FH ब्रैडली थे। और आप में से जो लोग क्लास के आखिरी दिन नहीं आए, वे हमेशा के लिए गरीब हो जाएँगे क्योंकि उसी दिन हमने FH ब्रैडली के बारे में बात की थी।

जिसका ज़िक्र व्हाइटहेड ने हेगेल के बजाय साफ़ तौर पर किया है। और गार्डनर एंथोलॉजी में आपके पास जो ब्रैडली मटीरियल है, उसमें आप देखेंगे कि ब्रैडली दिखावे और गुणों और पदार्थ की क्वालिटी में फ़र्क की बात करते हैं, और इस तरह की चीज़ों को सिर्फ़ एक कल्पना मानते हैं। अपने आप में कोई ठोस सच्चाई नहीं।

और व्हाइटहेड सहमत हैं। तो असल में ब्रैडली की एंथोलॉजी में जो चीज़ें हैं कि दिखावे की दुनिया असलियत नहीं, बल्कि एक चीज़ है, व्हाइटहेड उससे सहमत होंगे। आइडियलिज़्म में जिस चीज़ से वह सहमत नहीं हैं, वह है ब्रैडली का आइडियलिज़्म।

लेकिन नहीं तो, उसे इसे अपने हाथ में लेना है। ब्रैडली का कहना है कि जॉन लॉक से आया क्लासिक तरह का एंपिरिसिज़्म हर तरह के गलत एब्स्ट्रैक्शन, प्राइमरी-सेकेंडरी क्वालिटी के फर्क का दोषी है। खैर, ब्रैडली ने भी दिखाया कि यह एक एब्स्ट्रैक्शन था, जो असल अनुभव के लिए भी सच नहीं था।

पदार्थ की क्वालिटी में फ़र्क। खैर, मुझे लगता है कि बर्कले ने दिखाया कि यह एक एब्स्ट्रैक्शन था क्योंकि अगर आप सिर्फ़ क्वालिटीज़ जानते हैं तो आपको कैसे पता चलेगा कि पदार्थ क्या है? कुछ ऐसा जो मुझे नहीं पता एक अमूर्तता है । स्पेस-टाइम का अंतर।

खैर, मॉडर्न फ़िज़िक्स के हिसाब से तो यह एक एब्स्ट्रैक्शन बन जाता है। रिप्रेजेंटेशनल नॉलेज। ऐसे आइडिया जो किसी और चीज़ को दिखाते हैं।

एब्स्ट्रैक्शन। तो पूरी तरह से, वह उस एब्स्ट्रैक्शन को देखता है जो है। और जब ब्रैडली दिखने की दुनिया में असलियत के अलग-अलग लेवल की बात करते हैं, दिखने की दुनिया में असलियत के अलग-अलग लेवल की बात करते हैं, तो ठीक यही भाषा व्हाइटहेड को पसंद है।

दिखने में अलग-अलग डिग्री। और जब हम यहाँ नीचे आकर उसके धीरे-धीरे होने को देखेंगे तो हम इस पर ध्यान देंगे। चीज़ों का बेसिक नेचर कई डिग्री तक होता है, जो होने के क्रम में साफ़ दिखता है।

अब, 19वीं सदी के उस इवोल्यूशनरी आइडियलिज़्म में, एक और बात है जो शायद हेगेल में उतनी साफ़ नहीं है, हालाँकि हमने उसका ज़िक्र किया है। हम अक्सर उसे अलग कर देते हैं,

और वह है 19वीं सदी का रोमैंटिसिज़्म। मुझे पक्का नहीं पता कि व्हाइटहेड को यह हेगेल से उतना मिला जितना वर्ड्सवर्थ से।

उनकी बेटी ने लिखा कि उनकी ज़िंदगी में एक समय ऐसा भी था जब उन्होंने वर्ड्सवर्थ को ऐसे पढ़ा जैसे वह बाइबल हो। वर्ड्सवर्थ को ऐसे पढ़ा जैसे वह बाइबल हो। वह, मुझे लगता है , एक एपिस्कोपेलियन पादरी की पत्नी बनीं, इसलिए शायद उन्हें पता था कि वह किस बारे में बात कर रही हैं।

लेकिन वर्ड्सवर्थ की थीम उनमें पूरी तरह से मौजूद हैं। आप उन्हें 'द रोमांटिक रिएक्शन इन साइंस एंड द मॉडर्न वर्ल्ड' नाम के चैप्टर में देखेंगे, जिसमें फिलॉसफी जितनी ही पोएट्री भी है, जिसमें वर्ड्सवर्थ की पोएट्री भी शामिल है। क्योंकि वह एनलाइटनमेंट के मैकेनिस्टिक साइंस और रैशनलिज्म के मुकाबले रोमांटिकिस्ट रिएक्शन के फिलॉसॉफिकल कंटेंट को देख रहे हैं।

और ठीक है, यह 19वीं सदी के आइडियलिज़्म का हिस्सा है, लेकिन व्हाइटहेड इसे कहाँ से लेते हैं, यह बहुत साफ़ हो जाता है। और मुझे व्हाइटहेड की कविताओं और, क्या मैंने व्हाइटहेड की कविताओं में कहा? वर्ड्सवर्थ की कविताओं की कुछ भाषा के बीच वर्बल आइडेंटिटी मिली है। और व्हाइटहेड की प्रोसेस इन रियलिटी की कुछ भाषा , जो मेटाफ़िज़िक्स पर उनकी लंबी टेक्निकल किताब है।

यह बहुत दिलचस्प चीज़ है। इसलिए अगर आप व्हाइटहेड को अच्छे से पढ़ना चाहते हैं, तो मेरा सुझाव है कि आप उसी समय वर्ड्सवर्थ की कविताएँ भी पढ़ें। यह बहुत दिलचस्प है।

ठीक है, यह पहला असर है। दूसरा असर मॉडर्न साइंस से है। आखिर, वह पहले एक मैथमैटिशियन और फिर एक साइंटिस्ट थे।

उन्होंने बर्ट्रेंड रसेल के साथ मिलकर काम किया, मुझे लगता है 1903 में, एक ऐसे काम में जिसने सच में 20वीं सदी में सिंबॉलिक लॉजिक को इंट्रोड्यूस किया। एक काम जिसका नाम था ट्रैक्टेट। बर्ट्रेंड रसेल, नहीं, ट्रैक्टेट नहीं, उसी ने मुझे, प्रिंसिपिया मैथेमेटिका तक पहुंचाया।

प्रिंसिपिया मैथेमेटिका। मेरे पास यहाँ एक प्रॉम्प्टर है, आप देखेंगे, मेरी मदद के लिए। प्रिंसिपिया मैथेमेटिका, गणित के सिद्धांत।

जिसमें रसेल और व्हाइटहेड, जो दोनों उस समय कैम्ब्रिज में पढ़ा रहे थे, ने वॉल्यूम पर मिलकर काम किया, असल में यह दिखाते हुए कि मैथमेटिक्स को फॉर्मल लॉजिक में बदला जा सकता है। और इसलिए फॉर्मल लॉजिक में मैथमेटिकल सिंबॉलिज़्म को शामिल किया। ताकि वेरिएबल्स की अस्पष्टता को खत्म किया जा सके और लॉजिकियंस को पसंद आने वाले फॉर्मलाइज़्ड डिडक्टिव सिस्टम को मुमकिन बनाया जा सके।

तो वह पहले एक मैथमैटिशियन थे, जो उस समय के दूसरे मैथमैटिशियन की तरह, लॉजिक और इसलिए साइंस की फिलॉसफी में बहुत दिलचस्पी रखते थे। और लंदन यूनिवर्सिटी में रहने के

दौरान, जहाँ वह साइंस की फिलॉसफी पढ़ा रहे थे, उन्होंने थ्योरेटिकल फिजिक्स में तीन काम पब्लिश किए। खैर, कम से कम जहाँ थ्योरेटिकल फिजिक्स साइंस की फिलॉसफी के करीब है।

तो, ठीक है, वह इसमें बहुत ज़्यादा दिलचस्पी रखते थे। मॉडर्न साइंस में फिलॉसफी पर क्या असर डालता है ? एक, बेशक, डेवलपमेंटल बायोलॉजी है। मैक्रो लेवल पर, इवोल्यूशनरी थ्योरी, और माइक्रो लेवल पर, जेनेटिक्स।

डेवलपमेंटल बायोलॉजी। वह इसके बारे में उतना नहीं बोलते जितना फिजिक्स के बारे में बोलते हैं। वह फिजिक्स के ज़्यादा करीब थे।

और आप पाएंगे कि साइंस इन द मॉडर्न वर्ल्ड में, वह फिजिक्स में तीन मॉडर्न डेवलपमेंट के फिलोसोफिकल महत्व के बारे में बात करते हैं। सबसे पहले , इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फील्ड थ्योरी। इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फील्ड थ्योरी।

जिससे हम सिर्फ़ ग्रेविटेशनल पुल वाले बॉडीज़ के बजाय फ़ोर्स फ़ील्ड्स के बारे में सोचते हैं। फ़ोर्स फ़ील्ड्स। दूसरा, क्वांटम फ़िज़िक्स।

जहां बेसिक यूनिट्स, अगर आप चाहें तो, मैटर के सॉलिड पेलेट्स के बजाय एनर्जी की यूनिट्स हैं। क्वांटम फिजिक्स। और तीसरा, आइंस्टीन की थ्योरी ऑफ़ रिलेटिविटी, जिसमें स्पेस-टाइम रिलेटिविटी, जनरल थ्योरी ऑफ़ रिलेटिविटी शामिल है।

E बराबर mc स्क्वेयर्ड. रिलेटिविटी थ्योरी. जिस प्रोफेसर ने ग्रेजुएट स्कूल में व्हाइटहेड कोर्स पढ़ाया था, उन्होंने कहा था कि सिर्फ़ दो लोग ही थे जो असल में रिलेटिविटी की थ्योरी को समझते थे.

एक थे आइंस्टीन, दूसरे थे व्हाइटहेड। अब, पिछले 200 सालों में इसमें कोई सुधार हुआ है या नहीं, मुझे नहीं पता। लेकिन कम से कम ऐसा लगता है ।

क्या तुम जाग गए हो? ठीक है। लेकिन कम से कम वह रिलेटिविटी की थ्योरी को समझता है। और वह इसे अपने मेटाफ़िज़िक्स में शामिल करता है।

कमाल की बात है। अब, ध्यान दें कि क्या हो रहा है। यहाँ, वह एक आइडियलिस्ट के बजाय एक नेचुरलिस्ट है।

यहां, उन्हें मॉडर्न फ़िज़िक्स में दिलचस्पी है। इसलिए, मॉडर्न साइंस में दिलचस्पी रखने वाले एक नेचुरलिस्ट के तौर पर, वह एक साइंटिफ़िक रियलिस्ट बनने जा रहे हैं। साइंस को असलियत के बारे में एक प्रोविज़नल तरीके से बताने के तौर पर लेना।

आइडियलिस्ट का साइंस के बारे में एक फेनोमेननिस्ट नज़रिया था। व्हाइटहेड का साइंस के बारे में एक रियलिस्ट नज़रिया है। फिर भी दोनों के लक्ष्य और मकसद एक जैसे लगते हैं ।

यानी, ज़िंदगी और प्रकृति के बारे में एक रोमांटिक नज़रिया बनाए रखना। और जैसा कि हम बाद में देखेंगे, इस बात पर ज़ोर देना कि सच और कीमत के बीच कोई पक्का फ़र्क नहीं है। प्रकृति की दुनिया कीमत से भरी हुई है ।

अब, आइडियलिस्ट यही कहना चाहता था और इसलिए उसने असलियत के साइंटिफिक अकाउंट को रिजेक्ट कर दिया। व्हाइटहेड यही कहना चाहता है, लेकिन वह असलियत के साइंटिफिक अकाउंट को मानता है। कैसे? खैर, मॉडर्न साइंस में बदलाव की वजह से।

उनका मानना है कि डेवलपमेंटल बायोलॉजी और एनर्जेटिक फ़िज़िक्स, रिलेटिविटी थ्योरी, हमें यह कहने में मदद करती हैं कि दुनियावी ज़िंदगी के फ़िज़िकल फ़ैक्ट्स में वैल्यू, मतलब और मकसद भरा होता है। वह साइंटिफ़िक यूनिवर्स के एक टेलियोलॉजिकल मतलब पर वापस आ रहे हैं।

साइंस के मामले में फिलॉसफी का दोहरा काम है।

एक है साइंटिफिक एब्स्ट्रैक्शन की आलोचना करना। फिर से वही शब्द एब्स्ट्रैक्शन। वो एब्स्ट्रैक्शन जो इक्वालिटी जैसे किसी थ्योरेटिकल विचार को आखिरी सच्चाई मान लेते हैं।

एक गलत एब्स्ट्रैक्शन। उन एब्स्ट्रैक्शन की आलोचना करना फिलॉसफी के काम का हिस्सा है। और वह मैकेनिस्टिक साइंस की आलोचना करते हैं।

और आप पाएंगे कि आप जो किताब पढ़ रहे हैं, उसके पहले छह चैप्टर का यही मेन काम है। लेकिन दूसरा काम है, जिसे वह मॉडर्न साइंस पर आधारित अंदाज़े वाली कल्पना की उड़ान कहते हैं, उसमें शामिल होना।

दूसरे शब्दों में, साइंस से एक अंदाज़े वाली मेटाफिजिकल स्कीम में आगे बढ़ना। और वह अंदाज़े वाली कल्पना की उन उड़ानों की तुलना 1920 के दशक में प्लेन ट्रैवल से करते हैं। अगर आप इसकी कल्पना कर सकते हैं।

यानी, आप इस तरह की कल्पना की दुनिया में बादलों से ऊपर उड़ेंगे। समय-समय पर, असलियत की दुनिया में अपनी दिशा जानने के लिए, आप बादलों के नीचे उतरेंगे और पता लगाएंगे कि आप कहाँ हैं। मुझे लगता है कि आज, अगर वह सही होते, तो वह रडार चेक या ऐसा ही कुछ कहते।

लेकिन दूसरे शब्दों में, फिलॉसॉफिकल अंदाज़ों, मेटाफिजिकल अंदाज़ों की उड़ानें। लेकिन हमेशा साइंस और आम अनुभव के फैक्ट्स से शुरू होकर उन्हीं पर लौटना। ठोस अनुभव।

क्योंकि वह दोनों के बारे में रियलिस्टिक हैं। तो, अगर आप चाहें, तो उनके पास दो तरह के एंपिरिकल पॉइंट ऑफ़ रेफरेंस हैं। साइंस, ठोस अनुभव।

लॉक जैसे अनुभववादी की बातें नहीं। बल्कि ऐसा अनुभव जिसे हम अपने अंदर झाँककर बता सकें। सेल्फ-कॉन्शसनेस असलियत की खिड़की है।

खुद के बारे में सोचना। तो, आप पाएंगे कि इस बात को ध्यान में रखते हुए, वह हमेशा कुछ गलतफहमियों की बुराई करते हैं। गलत ठोस बातों की गलतफहमियां।

ओह-ओह, मुझे स्पेलिंग भी नहीं आती। ठीक है। गलत जगह पर ठोस होने की गलतफहमी और सिंपल लोकेशन की गलतफहमी।

खैर, अगर कंक्रीट, एब्स्ट्रैक्ट का उल्टा है, तो आप बता सकते हैं कि गलत जगह पर कंक्रीट होने की गलतफहमी क्या है। सिर्फ़ एब्स्ट्रैक्ट होने को कंक्रीट मान लेना। तो, गलत जगह पर कंक्रीट होने की गलतफहमी, एब्स्ट्रैक्ट चीज़ों को असली मान लेने की गलतफहमी है।

यह मान लेना कि जो असल में इंटेलेक्चुअल एब्स्ट्रैक्ट्स, थ्योरेटिकल एब्स्ट्रैक्ट्स हैं, उनका ठोस अस्तित्व है। ऐसा नहीं है। यह गलत जगह पर ठोस होने की गलतफहमी है।

और वह हमेशा मैकेनिस्टिक साइंस पर इसका आरोप लगाते हैं। फिर दूसरा है सिंपल लोकेशन की गलती। यह मान लेना कि एक यूनिफॉर्म स्पेस में फिक्स्ड पॉइंट्स हैं, न्यूटनियन टाइप का यूनिफॉर्म टाइम।

आसान लोकेशन। तो, आपको बस कोऑर्डिनेट्स बताने हैं, और आप चीज़ का पता लगा सकते हैं। यह न देख पाना कि मोशन जगह और समय दोनों में है।

और स्पेशल कोऑर्डिनेट्स समय के साथ बदलते रहते हैं। रिलेटिविटी। समय के साथ स्पेशल संबंध।

और इसलिए, एक सिंपल लोकेशन का आइडिया, जैसा कि हम जियोग्राफी में इस्तेमाल करते हैं, बस एक एब्स्ट्रैक्शन है जो कुछ लेवल पर काम का हो सकता है लेकिन दूसरे लेवल पर बिल्कुल बेकार है। तो, मॉडर्न साइंस के असर के हिसाब से। अब, तीसरा वाला आपको हैरान कर सकता है।

एलेक्जेंडरियन चर्च के फादर। और आप कह सकते हैं, एक फिलॉसॉफिकल नेचुरलिस्ट एलेक्जेंडरियन चर्च के फादर के साथ क्या ट्रैफिकिंग कर रहा है? और वह असल में, उनके लागोस डॉक्ट्रिन को खरीदने की कोशिश कर रहा है। वह यही कर रहा है, वहां शॉपिंग कर रहा है।

वह लागोस डॉक्ट्रिन खरीदना चाहता है। वह प्लेटोनिज़्म से बहुत प्रभावित है। खासकर, मिडिल प्लेटोनिज़्म से।

सिर्फ़ प्लेटो ही नहीं । बल्कि बीच का प्लेटोनिज़्म, जिसने नेचर के ऑर्डर्ड स्ट्रक्चर के बारे में बात करते हुए लागोस कॉन्सेप्ट डेवलप किया। अब, इसका मतलब समझने के लिए , आपको थोड़ा पीछे जाना होगा ।

शुरू में, जैसे कोई हेगेलियन यह कहना चाहेगा कि बाद की सारी फिलॉसफी हेगेल के फुटनोट्स की एक सीरीज़ है, वैसे ही व्हाइटहेड, एक जगह कहते हैं कि फिलॉसफी का पूरा इतिहास प्लेटो के फुटनोट्स की एक सीरीज़ है। और आप यह देखना शुरू करते हैं कि हेगेल के बारे में वह जो बात पसंद करते हैं, वह यह है कि प्रकृति की प्रक्रियाएं मूल रूप से आत्मा की प्रकृति, क्रिएटिव हैं , लेकिन उन प्रक्रियाओं के लिए एक लागोस स्ट्रक्चर, एक डायलेक्टिकल लागोस स्ट्रक्चर है। लेकिन यह इसे समझने में मदद करने के लिए बस एक ही चीज़ है।

दूसरी बात यह है कि वह एक पादरी के घर में पले-बढ़े थे। उनके पिता मेरे घर से 20 मील दूर, दक्षिण-पूर्व इंग्लैंड के शहर रैम्सगेट में इवेंजेलिकल सोच वाले एपिस्कोपेलियन पादरी थे। इसलिए, बचपन में, हम अक्सर अपनी साइकिल से रैम्सगेट जाते थे ।

और मुझे लगता है कि मैं चर्च को जानता था, हालांकि मैं वापस जाकर नहीं देख पाया कि वह कहाँ था। तो, व्हाइटहेड इसी घर में बड़े हुए। जब वह अंडरग्रेजुएट के तौर पर कैम्ब्रिज गए, तो कुछ समय तक वह बहुत ध्यान से थियोलॉजी पढ़ रहे थे और फिर उन्होंने तय किया कि यह उनके लिए नहीं है।

वह इसे खरीद नहीं सका। उसने अपनी थियोलॉजी की सारी किताबें बेच दीं, अपना ध्यान मैथ्स की तरफ लगाया, और बर्ट्रेंड रसेल के साथ मिलकर अंडरग्रेजुएट था। हालांकि, बाद में, 1930 के दशक में पब्लिश हुई उसकी एक किताब, एडवेंचर्स ऑफ आइडियाज, में यह साफ पता चलता है कि उसे थियोलॉजी में और खासकर ओरिजन और एलेक्जेंड्रिया के क्रिश्चियन प्लेटोनिस्ट में नई दिलचस्पी थी।

ओरिजन, क्लेमेंट, वह परंपरा। मिडिल प्लेटोनिज़्म वहाँ है। और जो बात उन्हें पसंद आई, वह है लोगो का कॉन्सेप्ट और यह आइडिया कि भगवान से निकलने वाले अच्छे में, और आपको याद होगा कि वे एक्स निहिलो क्रिएशन के बारे में साफ़ नहीं थे, भगवान से निकलने वाले अच्छे में, वह लोगो का स्ट्रक्चर हर सीमित मैनिफेस्टेशन में ट्रांसफर होता है, जैसा कि स्टोइक्स में था, जिनके लिए लोगो स्पर्मेटिकोस था , हर खास चीज़ में सेमिनल लोगो।

और यह प्रकृति के व्यवस्थित होने , प्रकृति की अच्छाई का हिसाब रखने का तरीका है। भगवान ने कहा कि यह अच्छा है। प्लेटोनिज़्म की थीम यह है कि होना अच्छा है।

ज़रूरी नहीं कि बनना ही अच्छा हो, लेकिन होना अच्छा है। और यही वह चीज़ है जो असलियत की दुनिया में वैल्यू का आधार खोजने के तरीके के तौर पर खास तौर पर अपील करती है । लोगो स्ट्रक्चर।

ठीक है, तो वो तीन असर। मैं यहीं रुककर आपका फ़ीडबैक, सवाल और क्लैरिफ़िकेशन लेना चाहता हूँ। क्या इससे आप स्प्रिंग ब्रेक के बाद फिर से ट्यून हो जाते हैं? ट्यून इन हो जाते हैं? ठीक है, इन तीनों के बारे में काफ़ी साफ़ है? ठीक है।

तो हम यहाँ हैं। ठीक है, तो हमारा अगला काम खुद से पूछना है कि यह मेटाफिजिकल स्कीम क्या है। जिसे वह ठोस अनुभव और मॉडर्न साइंस के आधार पर अंदाज़े की उड़ान में डेवलप करता है । खैर, क्योंकि हमने कहा है कि वह आइडियलिस्ट के बजाय एक नेचुरलिस्ट है, लेकिन वह 19वीं सदी के आइडियलिस्ट और खासकर रोमांटिक थीम से बहुत ज़्यादा प्रभावित है, तो वह यह कैसे बताएगा कि अल्टीमेट क्या है? अब, वह अल्टीमेट रियलिटी को ऐसे नहीं कहता जैसे अल्टीमेट रियलिटी एक रियलिटी है और कई दूसरी भी हैं।

देखिए, यह तो आस्तिक की भाषा होगी। आखिरी सच्चाई भगवान है। और भी कई छोटी-मोटी सच्चाईयाँ हैं।

यह व्हाइटहेड की भाषा नहीं है। व्हाइटहेड के लिए असली सच्चाई वह है जो हर चीज़ में धड़कती है। और उनके लिए असली सच्चाई है, क्या आपको पता है, क्रिएटिविटी।

आप कहते हैं, यह कोई चीज़ नहीं है। यह एक प्रॉपर्टी है। खैर, आप सही कह रहे हैं, यह कोई चीज़ नहीं है।

उनका मानना है कि कोई चीज़, मेटाफ़िज़िक नहीं है, कि कोई चीज़ सबसे अच्छी है। क्या क्रिएटिविटी कोई प्रॉपर्टी है? नहीं, बिल्कुल नहीं। यह एक प्रोसेस है।

यह नएपन के उभरने का प्रोसेस है। और यही नएपन का असली मतलब है। क्रिएटिविटी, नयापन।

अब, सावधान रहें, यह क्रिएटिविटी, तब भी जब वह भगवान के बारे में अपनी सोच को शुरू से कहीं ज़्यादा पूरी तरह से डेवलप करता है, यह क्रिएटिविटी भगवान नहीं है। यह भगवान नहीं है। खैर, जिसने ब्रैडली को पढ़ा है, उसके लिए यह कोई हैरानी की बात नहीं है, क्योंकि ब्रैडली के लिए एब्सोल्यूट भी भगवान नहीं है।

भगवान बस परम सत्ता का सबसे ऊँचा रूप है। और व्हाइटहेड के लिए, भगवान बस क्रिएटिविटी का सबसे ऊँचा रूप है। अब, तुरंत, आप समझने लगते हैं कि व्हाइटहेड का भगवान हमारी ईसाई परंपरा में लोगों को क्यों आकर्षित करता है।

देखिए, अगर भगवान क्रिएटिविटी का सबसे बड़ा रूप हैं, तो ऐसा लगता है कि उन्हें बनाने वाला माना जा सकता है। लेकिन, ठीक है, सबसे बड़ा। अब, आप क्रिएटिविटी के प्रोसेस को कैसे बताएंगे? खैर, ज़ाहिर है, पूरी क्रिएटिविटी बताने के बजाय किसी क्रिएटिव घटना के बारे में बताना शुरू करना चाहिए ।

और जैसे ये आइडियलिस्ट लोग करते हैं, वे असलियत के बड़े स्क्रीन को सेल्फ-कॉन्शसनेस के लेंस से देख रहे होते हैं। तो, व्हाइटहेड फिर किसी क्रिएटिव घटना को, जिसे हम अपने अनुभव से जानते हैं, अपने अंदर झाँककर देखने की कोशिश करते हैं। तो, सबसे आसान चीज़ जिससे शुरू किया जा सकता है, और जो उनके लिए हमेशा से एक पैराडाइम केस रही है, वह है सेंस परसेप्शन का अनुभव।

इंद्रियों का अनुभव। अब, ध्यान दें कि हेगेल ने मन की अपनी फेनोमेनोलॉजी यहीं से शुरू की थी। सब्जेक्टिव स्पिरिट।

सेंसेशन। और परसेप्शन। और क्योंकि वह सेंस परसेप्शन के इस अनुभव को अपने अंदर झाँककर बता रहे हैं, इसलिए वह हमें सेंस परसेप्शन का एक फेनोमेनोलॉजिकल डिस्क्रिप्शन देने जा रहे हैं।

फेनोमेनोलॉजिकल मेथड, हेगेल की तरह। फेनोमेनोलॉजिकल मेथड। तो फिर वह सेंस परसेप्शन को बताते हुए क्या करता है? खैर, वह परसेप्चुअल एक्सपीरियंस में तीन मोड में फर्क करता है।

के मोड में परसेप्शन। ठीक है? पहला है कॉज़ल इफ़ेक्टिविटी के मोड में परसेप्शन। दूसरा है प्रेज़ेंटेशनल इमिडिएसी के मोड में परसेप्शन।

तीसरा है सिंबॉलिक रेफरेंस के तरीके में परसेप्शन। अब, जैसे-जैसे वह इसे डेवलप करते हैं, जैसा कि वह कई जगहों पर करते हैं, जैसे-जैसे वह इसे डेवलप करते हैं, यह हमेशा जॉन लॉक की परसेप्शन की थ्योरी के उलट होता है। अब, जैसा कि जॉन लॉक सेंस परसेप्शन के बारे में बताते हैं, पहले क्या आता है? कॉज़ल इफ़ेक्टिवनेस या आइडिया? हैं? इसके फेनोमेनोलॉजी में, इसकी कॉन्शसनेस में, पहले क्या आता है? आइडिया।

यही शुरुआती जगह है। इसकी चेतना में। ये विचार हैं।

और व्हाइटहेड के लिए, यह पूरी तरह से गलत है। यह झूठ है। वह इसे प्रेजेंटेशनल इमिडिएसी की प्रायोरिटी की फॉलसी कहते हैं।

उन्हें चीज़ों को गलत कहना पसंद है। 1910 और 20 के दशक में यह चलन में था। प्रेजेंटेशनल इमिडिएसी को प्राथमिकता देने की गलत बात।

आप बता सकते हैं कि प्रेजेंटेशनल इमिडिएसी क्या है। वह आइडिया जो तुरंत कॉन्शसनेस के सामने पेश किया जाता है। कॉग्निटिव।

प्रेजेंटेशनल इमिडिएसी कॉग्निटिव कंटेंट, आइडिया है। जबकि कॉज़ल इफ़ेक्टिविटी, ज़ाहिर है, अगर हम इसके बारे में जानते हैं, तो यह कॉग्निटिव कॉन्शसनेस के बजाय अफ़ेक्टिव है । और इसका अवेयरनेस सेंस परसेप्शन में कम साफ़ होता है, मेरा मतलब है विज़ुअल परसेप्शन में,

उदाहरण के लिए, ऑडिटरी चीज़ों की तुलना में, जहाँ तेज़ आवाज़ होती है और फिर आप बाद में समझते हैं कि यह क्या है।

या छूने के मामले में, जहाँ पहचान ज़्यादा धीरे-धीरे होती है। लेकिन उनका कहना है कि अगर हम देखने वाले को पूरी साइकोसोमैटिक यूनिटी, पूरा इंसानी शरीर मानते हैं, तो फेनोमेनोलॉजिकल नज़रिए से, चेतना के हिसाब से, पहली चीज़ कॉज़ल इफ़ेक्टिवनेस है। कोई असर होता है, कॉज़ल तरीके से, जो महसूस होता है।

और, इंद्रियों की समझ की साफ़ समझ से गुमराह होकर, लॉक ने कुछ और ही कहा। लेकिन देखने में भी, अगर रोशनी काफ़ी तेज़ है, तो उसे पहले महसूस किया जाता है। चमकदार रोशनी।

तो, कॉज़ल इफ़ेक्टिविटी के तरीके में प्रायोरिटी । अब, ध्यान दें कि यह क्या करता है। आप देखिए, जॉन लॉक में, यह आइडिया सबसे पहले आया।

तो, सवाल यह है कि इसकी वजह क्या थी? और आपको आइडिया से, जो सोचा जाता है, महसूस नहीं होता, बल्कि सोचा जाता है, पूरी तरह से इंटेलेक्चुअल तरह का एक कॉज़-इफ़ेक्ट आर्गुमेंट रखना होगा , और यह भी कि हमें यह आइडिया सोचने की वजह क्या थी। यानी, आइडिया एक रिप्रेजेंटेशन है।

उम्मीद है, यह एक कॉपी है। और ऐसा क्या है जिससे यह होता है, हमें नहीं पता। हमें अंदाज़ा लगाना होगा ।

क्या कोई कारण है? हमें नहीं पता। पक्का नहीं। इसलिए, इसका मतलब है कि असलियत के बारे में हमारी जानकारी हमेशा इनडायरेक्ट होती है।

इसका लॉजिकली अंदाज़ा लगाना होगा । लेकिन व्हाइटहेड के लिए, अगर कॉज़ल इफ़ेक्टिवनेस ही चीज़ है, कॉज़ल इफ़ेक्टिवनेस, आप देखिए, कॉज़ल इफ़ेक्टिवनेस के उस अनुभव में, मुझे असर करने वाले कारण का सीधा ज्ञान होता है। जैसे अगर रायन खड़ा हो और मैं उसके जबड़े पर मुक्का मारूँ , तो उसे उस कारण का सीधा पता होगा जो उसे असर कर रहा है।

तो, इस आधार पर, हमारे पास जो है, इस आधार पर, हमारे पास जो है, वह एक असली चीज़ के होने का सीधा ज्ञान है। इसी तरह वह एक रियलिस्ट हो सकता है। आप देखिए, डेविड ह्यूम के उलट, कि हम सिर्फ़ कॉन्सटेंट कंजंक्शन जानते हैं; वह तर्क दे रहा है कि हम कॉज़ल कनेक्शन का अनुभव करते हैं।

ह्यूम गलत हैं। ह्यूम प्रेजेंटेशनल इमिडिएसी की प्रायोरिटी की गलतफहमी में फंस गए। देखिए, इतने बड़े लेबल के साथ, आपको लगता है कि वह इसे पकड़ सकते थे।

लेकिन, नहीं। वह लॉकियन सोच में पूरी तरह फंसा हुआ था। कॉज़ल इफ़ेक्टिवनेस की इस अवेयरनेस का लगातार कंजंक्शन से कोई लेना-देना नहीं है।

रयान को कितनी बार ठोड़ी पर मार खानी पड़ेगी, तब जाकर उसे पता चलेगा? कोई एक, पक्का , यह कर देगा। इसकी तुरंतता। फिर प्रेजेंटेशन की तुरंतता आती है।

एक आइडिया दिमाग में आता है. अब, इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि आइडिया सही है. आप जानते हैं कि यह कैसे होता है.

सुबह, घंटी बजने से आपकी नींद खुलती है, और आप अलार्म घड़ी उठाकर कहते हैं, हैलो। आपको गलत आइडिया है। लेकिन आपको एक आइडिया है।

तो, प्रेजेंटेशनल इमिडिएसी आपको एक हाइपोथेटिकल आइडिया देती है। कोई गारंटी नहीं। और आप जो करते हैं वह यह है कि उस आइडिया को लेते हैं और उसे स्टिमुलस के कारण से जोड़ते हैं।

ध्यान दें कि यह आइडिया कोई रिप्रेजेंटेशन नहीं है, बल्कि एक कॉपी है। यह एक सिंबल है। उन्हें यह भाषा कहां से मिली? सीधे ब्रैडली से।

देखिए, ब्रैडली ने पारंपरिक अनुभववाद की आलोचना करते हुए कहा था कि विचार कॉपी या रिप्रेजेंटेशन नहीं होते। वे सिंबल होते हैं जिनका इस्तेमाल हम चीज़ों के बारे में सोचने में करते हैं। इसलिए, हम विचार लेते हैं और उसे ज़िक्र करने के लिए एक सिंबल के तौर पर इस्तेमाल करते हैं।

तो, हमें किसी चीज़ के सार का इनडायरेक्ट ज्ञान होता है। सार वही है जो वह है। अस्तित्व वही है जो वह है।

तो, आपको सीधे तौर पर पता है कि कुछ है, और इनडायरेक्ट तौर पर पता है कि वह क्या है। अब, ध्यान दें कि इसमें क्या शामिल है, इस तीन तरह के काम में कुछ और भी शामिल है। इन तीनों में ऐसा क्या है जो परसेप्चुअल एक्सपीरियंस का कारण है? वे कौन से कारण हैं, वे कौन से फैक्टर हैं जो इस परसेप्शन के एक्सपीरियंस को बनाते हैं? खैर, सबसे पहले, ऑब्जेक्टिव डेटा, ऑब्जेक्टिव गिवन्स हैं जो कॉन्शसनेस की मौजूदा हालत पर असर डालते हैं।

तो, अगर आप चाहें, तो मेरे दिन में सपने देखना इन वजहों से परेशान होता है। वजहों से होने वाली स्टिमुलस ऑब्जेक्टिव डेटा होते हैं जो वजहों से असर डालते हैं। दूसरा, जैसे-जैसे विचार डेवलप होते हैं, इन्हें वह हमेशा रहने वाली पॉसिबिलिटीज़ कहते हैं।

रात के इस समय फ़ोन बज रहा है । आप कहते हैं कि यह हो सकता है। आप गलत हैं।

यह अलार्म क्लॉक है। लेकिन आइडिया तो बस पॉसिबिलिटीज़ हैं जो दिमाग में आती हैं। और दुनिया हर तरह की पॉसिबिलिटीज़ से भरी पड़ी है।

ऑब्जेक्टिव, लॉजिकल संभावनाएं जिनके बारे में आप सोचते हैं। और फिर एक तीसरा फैक्टर है जो परसेप्चुअल एक्सपीरियंस को पूरा करता है। डिसीजन।

तो आप हेलो कहते हैं और महसूस करते हैं कि आप अपने फैसले में गलत थे। लेकिन फैसला, आप देखिए, हमेशा रहने वाली संभावनाओं में से चुनना है, स्टिमुलस द्वारा बताई गई संभावनाओं की पूरी रेंज में से। आप उसमें से चुनते हैं और उसके साथ चलते हैं।

और हो सकता है कि आप जिस चीज़ के लिए जिस सिंबल का इस्तेमाल करते हैं, वह काम करे। हो सकता है कि न करे। लेकिन अनुभव के साथ, आपको पता चलने लगता है कि आपको कौन सा सिंबल चाहिए, क्या काम करेगा।

अब, मैंने कहा कि परसेप्चुअल एक्सपीरियंस उसका पैराडाइम इवेंट है। एक परसेप्चुअल एक्सपीरियंस का इवेंट। बहुत बढ़िया।

और उनका कहना है कि हर अनुभव में, हर घटना में, पूरे कॉस्मिक प्रोसेस में, सबसे पहले कॉज़ल इफ़ेक्टिविटी होती है। असली कॉज़ल प्रोसेस। दूसरी बात, मन के सामने पॉसिबिलिटीज़, आइडियाज़ के तौर पर पेश की जाने वाली पॉसिबिलिटीज़ का मनोरंजन करना है।

मेरे पास एक आइडिया है। आइडिया क्या है? यह एक पॉसिबिलिटी है। यह क्या हो रहा है? खैर, मेरे पास एक आइडिया है।

संभावना। और एक फ़ैसला होता है, जिसमें, इस प्रोसेस में, किस्मत तय होती है, और आप एक संभावना के साथ जाते हैं। अब, आप इसे और आम तरीके से डायग्राम कर सकते हैं।

इसे ऐसे डायग्राम करें। इस पॉइंट तक का प्रोसेस यह है। इस पॉइंट पर, कुछ कॉज़ल इंटूज़न है।

ठीक है। इसके बाद, ऐसी सभी तरह की हमेशा रहने वाली संभावनाएं एक साथ आती हैं, जो इस तरह के कारण से होने वाले दखल से पता चलती हैं। तो, अनगिनत संभावनाओं में से, कुछ ऐसी हैं जो इस खास मामले में काम की हैं ।

और इनसे एक फ़ैसला लिया जाता है। आप देखिए, इन संभावनाओं के साथ, आप उस दिशा में जा सकते हैं। संभावनाएँ एक, दो, तीन।

आप उस दिशा में जा सकते हैं। आप उस दिशा में जा सकते हैं। आप उस दिशा में जा सकते हैं।

अलग-अलग हमेशा रहने वाली संभावनाओं के हिसाब से। और नंबर दो चुनना, पूरी रफ़्तार से आगे बढ़ना, उस दिशा में। तो कॉस्मिक प्रोसेस में हर घटना में हमेशा तीन चीज़ें होती हैं।

ऑब्जेक्टिव कॉज़ल गिवेन्स । अंदरूनी संभावनाएँ। हाँ, नेचुरल प्रोसेस अच्छे, बुरे, वैल्यू-लोडेड संभावनाओं से भरा होता है ।

हाँ। तो आपको ऑब्जेक्टिव कॉज़ल मिल गया है, आपको हमेशा रहने वाली संभावनाएँ मिल गई हैं, और तीसरा, आपको फ़ैसला मिल गया है। अब, अगर आप इसे समझ सकते हैं, तो व्हाइटहेड आसान है।

देखिए, व्हाइटहेड का बेसिक सवाल यह है कि इन हमेशा रहने वाली पॉसिबिलिटीज़ का सोर्स क्या है? और क्योंकि मैंने आपको पहले ही बता दिया है कि वह एक लागोस डॉक्ट्रिन ढूंढ रहे हैं, तो सोर्स क्या है? भगवान, लागोस। जो किसी भी तरह से क्रिएटर नहीं है XD, हेलो। भगवान कोई कॉज़ल फ़ोर्स नहीं है।

भगवान बस ऑर्डर देने वाले हैं , भगवान हैं, भगवान हैं। आप देखिए, इसीलिए वह आस्तिक नहीं हैं। क्या वह देववादी हैं? नहीं, देववादी तो रचना भी करते हैं।

तो वह आस्तिक नहीं है, वह देववादी नहीं है। क्या वह पैन्थेइस्ट है? नहीं, क्योंकि सबसे बड़ी घटना, जो कि ईश्वर है, के अलावा भी दूसरी घटनाएँ हैं। खैर, वह क्या है? वह व्हाइटहेड है।

आप देखिए, वह क्लासिफिकेशन में फिट नहीं बैठता। हाँ, मुझे वहीं रुकना है। क्या आप देख रहे हैं कि वह क्या कर रहा है? आप पाएंगे कि ये तीन एलिमेंट, मैं कहूंगा, उसकी पूरी मेटाफिजिकल स्कीम में बहुत बड़े हैं; ऑब्जेक्टिव डेटा बस दूसरी घटनाएं हैं।

दूसरी स्पेस-टाइम घटनाएँ, जो इस स्ट्रीम की मौजूदा स्थिति पर कारण के तौर पर असर डालती हैं। तो दो कारण वाली स्ट्रीम का एक मिलन होता है। इन हमेशा रहने वाली संभावनाओं को वह हमेशा रहने वाली चीज़ें कहते हैं।

पदार्थ के अर्थ में वस्तुएँ नहीं, बल्कि विचार की वस्तुओं, विचारों के अर्थ में। विचार विचार की वस्तुएँ हैं, विचार की वस्तुएँ। ये शाश्वत वस्तुएँ हैं।

इवेंट्स को वह कभी-कभी एक्चुअल एंटिटीज़ कहते हैं। इसलिए उनका मेटाफ़िज़िक एक्चुअल एंटिटीज़ का मेटाफ़िज़िक है जिसमें एक स्पेस-टाइम प्रोसेस शामिल है। हमेशा रहने वाली चीज़ों के साथ, जो इस बात की लॉजिकल पॉसिबिलिटीज़ हैं कि क्या हो सकता है, और ऐसे फ़ैसले जो चीज़ों की इंडिविजुअलिटी को ध्यान में रखते हैं।

यह एक पर्सनल सोच, एक खास सोच क्या बनाता है? आप देखिए, आपकी ज़िंदगी को आपकी पर्सनल ज़िंदगी क्या बनाता है? खैर, उस स्ट्रीम में एक फ़ैसला, एक फ़ैसला, एक फ़ैसला, एक फ़ैसला होता है। एक ऐसा फ़ैसला जो हर मामले में वह लाता है जिसे वह सैटिस्फैक्शन कहते हैं, ज़रूरी नहीं कि इमोशनल सैटिस्फैक्शन हो, बल्कि इस मायने में कि कॉज़ल स्टिमुलस किसी न किसी तरह से खुद में घुल-मिल जाता है। तो यह चल रही इंडिविजुअलिटी का एक हिस्सा बन जाता है।

तो इस प्रोसेस में अलग-अलग चीज़ें शामिल होती हैं जो दूसरी अलग-अलग चीज़ों से कॉज़ुअली जुड़ी होती हैं। अगर आप चाहें, तो अलग-अलग सब-प्रोसेस दूसरी अलग-अलग सब-प्रोसेस से

कॉज़ुअली जुड़ी होती हैं। जिसमें हर तरह की पॉसिबिलिटीज़, क्रिएटिव पॉसिबिलिटीज़ के लिए जगह होती है।

इनमें से कुछ ही असल में होते हैं। और उनमें से कुछ फैसलों की वजह से असल में होते हैं, जिनकी वजह से आप अपने प्रोसेस में जिस दिशा में जाते हैं। अब, इस तरह की घटना पैराडाइम है , और यहीं से हम ग्रेजुअलिज़्म को समझ सकते हैं।

क्योंकि जब समझ में आता है तो यह एक सचेत चीज़ होती है, और आपको इन तीनों चीज़ों की चेतना होती है, लेकिन असलियत के दूसरे लेवल पर, यह सचेत नहीं हो सकता है। इसलिए फ़ैसले का एक लो-ग्रेड एनालॉग होता है, जो सचेत नहीं होता, जिसमें कोई फ़ैसला नहीं ले रहा होता, लेकिन यह कट-ऑफ़ पॉइंट होता है, जिसमें, घटनाओं के मिलने पर, एक निश्चित संभावना पक्की होती है। उदाहरण।

पिछले हफ़्ते के उस खूबसूरत मौसम में, मेरे डैफ़ोडिल, नहीं, मेरे ट्यूलिप, माफ़ करना, मेरे ट्यूलिप बल्ब जो पीछे के आँगन में फूलों की क्यारी पर लाइनों में लगे थे, सचमुच बहुत ऊँचे हो रहे थे। और मेरा मन इस मौसम में पहले से कुछ हफ़्ते पहले ही रंगों की चमक की संभावनाओं से भर गया था । अब बेशक, मेरे दिमाग में और भी संभावनाएँ आईं।

लेकिन मेरे ट्यूलिप के बढ़ने के प्रोसेस के लिए, हर तरह की पॉसिबिलिटीज़ थीं। लेकिन फिर फ़ैसले का पल आया, पिछले हफ़्ते आई ठंड की वजह से। जिससे मेरे ट्यूलिप जम गए, जिससे अब वे बेजान, मरे हुए, ज़मीन पर झुके हुए हैं।

अब हर तरफ़ एक संभावना थी। और सबसे अहम पल था वह गहरी ठंड, एक रात में तापमान दस डिग्री तक गिर गया। मेरे स्प्रिंग ट्यूलिप्स निकल जाओ।

और आपके पास सब कुछ एक जैसा है। आपके पास एक दिया हुआ प्रोसेस है, जिसमें हर तरह का ऑब्जेक्टिव डेटा होता है जो उन पर असर डालता है। और उन पर असर डालने वाले ऑब्जेक्टिव डेटा के आधार पर , संभावनाओं की एक पूरी रेंज होती है।

अब, ट्यूलिप के साथ यह उन सोच-समझकर लिए गए फैसलों से कहीं ज़्यादा तय होता है जो आप और मैं करते हैं। वह यह नहीं कह रहे हैं कि फैसला ट्यूलिप की तरफ से आज़ादी से होता है। लेकिन वह कह रहे हैं कि एक हफ़्ते पहले, यह तय नहीं था और घटनाओं का संगम था।

बस इतना ही। तो हर इवेंट में आपके पास यही होता है। यह प्रोसेस का नेचर है।

अरे, हम समय से ज़्यादा हो गए , माफ़ करना। ठीक है, हम अगली बार इस पर बात करेंगे।